Vol 5 Issue 8 May 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 8 | May - 2016

Review Of Research

21 वी सदी में संगीत : विकास एंव दुकश्राव्य माध्यमों का प्रभाव

प्रिती बन्सीधर इंगळे (वाकपांजर)
सहा. प्राध्यापिका गुलाम नबी आझाद कला,
वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय बार्शिटाकळी, जि.अकोला (महाराष्ट्र)

सारांशः

संगीत, चित्र, शिल्प, स्थापत्य साहीत्य और नाटय यह सभी कलाएँ अपने यहा प्रमुखता से मानी जाती है। यह कलाएँ अनुक्रम से श्रुती संवेदना, दुक श्राव्य संवेदना, दुक स्पर्श संवेदना और संपुर्ण संवेदना इनकों आवाहन करते हैं। इन कलाओं का माध्यम अनुक्रम में स्वर, रंगरेषा, धातु और तत्सदृष्य घनपदार्थ शब्द और संवाद है। संगीत कला को यदि छोड़ दे तो इन संपुर्ण कलाओं का आशय मानवी जीवन है। लेकीन संगीत कला का माध्यम स्वर और आशय ही स्वर संगीत यह निसर्ग निरपेक्ष कला है।

प्रस्तावना :

नाटय शास्त्र एक संगीत का अंग माना जाता है। नृत्य, गीत, नाटक और रस यह नाट्यशास्त्र के प्रधान विषय है। नाटक में नृत्य, गीत, नाटक की रचना और उसके प्रयोग इन प्रकारो का समावेश हेाता है। आधुनिक काल में पार्श्वगायन, पाश्वसंगीत में 1.साथसंगत 2. स्वरोकी रिक्त जगह भरना 3. मनोवैज्ञानिक परिणाम 4. अखंडता 5.भावनाओं का अविष्कार यह समाविष्ठ है,और समुह गान नाटक और लोककला इसका समावेश दृकश्राव्य कलाओं में होता है। आज के वैज्ञानिक युग में अनेक शोध दिखाई देते है इन शोधों के कारण मानवी जीवन में अनेक दालन समृध्द हो गये है। इन वैज्ञानिक शोध के कारण संगीत के रसीक श्रोताओं और अभ्यासकों को लाभ हुआ है। वैज्ञानिक विकास का फल स्वरूप आज प्रचार में हमें संगीत क्षेत्र का प्रचार–प्रसार करने के लीए दृकश्राव्य साधन जैसे रेडीओ,टेपरेकॉर्डर, टेलीवीजन, संगणक, फील्म, इंटरनेट, समाचारपत्र, पत्रिकाएँ ऐसे अनेक साधनों का लाभ हुआ दिखाई देता है।

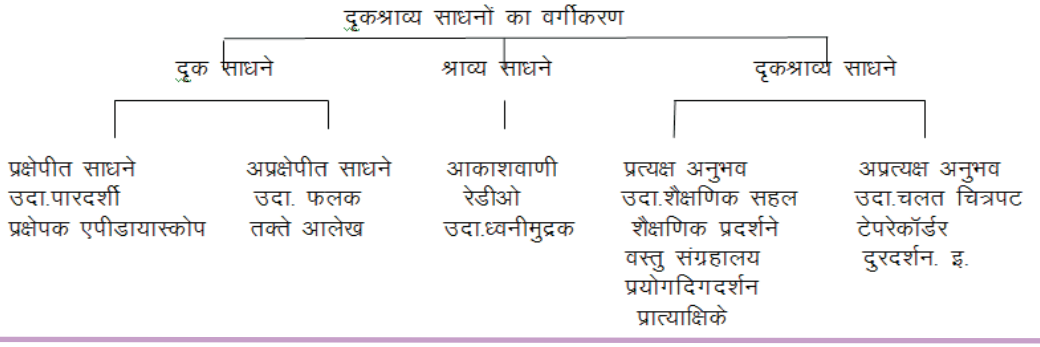

21 वी सदीं में संगीत का प्रचार एवं प्रसार कीस तरह से हो रहा है और इसमें दृकश्राव्य माध्यमों का क्या प्रभाव है यह इस शोध निबंध में बताया गया है।

संसार में जितनी भी विधाऍं तथा कलाऍं है उन सभी में संगीत का सर्वश्रेष्ठ स्थान हैं। क्योकि प्रत्येक क्षेत्र का मनुष्य स्वातः सुखाय संगीत की शरण चाहता है। यह लौकीक तथा परलौकीक दोनों ही सुखों को प्रदान करनेवाला तंत्रमंत्र की मुल शक्ति तथा ब्रह्म का अप्रत्यक्ष एव प्रत्यक्ष रूप है। बीसवीं तथा इक्कीसवी शताब्दी संगीत कला की दृष्टी से एक अनोखी क्रांती का युग मानी जाती है। इस समय अनेक संगीत तज्ञ एवं शिक्षा विद्वतजनों ने विभिन्न माध्यमों द्वारा संगीत का प्रचार–प्रसार कर उसे समृध्द किया। शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार एवं उन्नति के दृष्टी से जन संचार माध्यम एवं दृकश्राव्य उपकरण, कंम्प्युटर ,रेडीओ, टेपरेकॉर्डर, टी.व्ही, संगीत सम्मेलन शिक्षण–संस्थाए,फील्म, समाचार पत्र–पत्रिकाए, इंटरनेट प्रशासनीक प्रक्षेप आदी महत्वपुर्ण घटक के रूप में सामने आए है।

अंर्तवस्तु :–

1.21 वी सदीमें संगीत.
2.दृकश्राव्य माध्यमें.
अ.रेडीओ.
ब. टेपरिकॉर्डर – ; कॅसेटस एवं सिडी द्ध
क.इंटरनेट मीडीया.
ड.दुरदर्शन

21 वी सदीं में संगीत.:–

हम सभी यह जानते ही है कि 21 वी सदी को ही वैज्ञानिक युग कहॉ जाता है। जब की 21 वी सदी प्रारंभ हुए केवल 15 वर्ष ही हुए है किंतु इसके पुर्व से ही अर्थात 20 वी शताब्दी के उत्तरार्ध से ही हमें वैज्ञानिक युग मनाना चाहीए। वर्तमान वैज्ञानिक युग में संचार माध्यमों के प्रयोग ने क्रांती पैदा कर संपुर्ण विश्व को एक सुत्र से बांध दिया है। देश की संस्कृति, कला, शिक्षा इत्यादी को समृध्द एवं विकसित करने व उच्च शिक्षा को विस्तारीत करने में संचार माध्यम अंत्यत लोकप्रिय एवं लाभप्रद सिध्द हुए है। इस वैज्ञानिक युग में विज्ञान का प्रभाव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ रहा है। चाहे वह देश की उपज हो, औद्योगिकरण, रहन–सहन, सुख–शांती, या कला कौशल सभी पर विज्ञान की प्रतिक्रिया स्पष्ट दिखाई दे रही है। जहॉ विज्ञान, साहित्य, मनोविज्ञान चिकीत्सा तकनीकी इत्यादी में दुरसंचार माध्यमों का प्रयोग बढ़ा है। वह संगीत कला भी इससे अच्छुती नहीं है। 21 वीं शताब्दी में संगीत, नृत्य और कलापर विशेष जोर दिया जा रहा है। संगीत कला का उद्देश निराकार को साकार रूप देना है। श्री पुरूषोत्तमदास अग्रवाल कहते है '' संगीत निबंधावली '' मे लीखा है ''आज संगीत व्यक्तीगत साधनाका केंद्र न होकर समष्ठीगत चेतना को अर्विभुत करने का एक सबल साधन हो गया है'' ।1

21 वीं सदी में संगीत का प्रचार एवं प्रसार बहुत तेजीसे हो रहा है। भारतीय कलाओं को देशविदेशों में प्रसारीत करने में विभिन्न माध्यम सशक्त रहें है। जिनमें विदेशों में भारतीय कार्यक्रमों का आयोजन जैसे राष्ट्रीय, अंर्तराष्ट्रीय चर्चासत्र, कला की शिक्षा, दिक्षा, Fusion Remix, films, T.V, Internet हमारी संस्कृति कितनी उच्च कोटी की है यह हमें तब ज्ञात होता है जब विदेशी इसे आत्मसात करते है। उन्होंने केवल संगीत की ही नहीं अपितु हमारी वेशभुषा, आचार–विचार, भाषा आदी आत्मसात कर भारतीय संस्कृति को गरीमा प्रदान की है। भारत के महान विभुतियों में जिनमें सर्वप्रथम नाम आता है पंड़ीत रविशंकरजी का जिन्होंने भारतीय संगीत कला, नृत्य कला विदेशों में प्रचार एवं प्रसारीत किया तथा शिक्षा संस्थाओं का निर्माण किया। वैसे ही उस्ताद अली अकबर खान और उस्ताद जाकीर हुसेन जैसे संगीतकार ग्लोबल हो गये। उसी प्रकार बिस्मिल्ला खॉ, पं.भिमसेन जोशी, शिवकुमार शर्मा, पं.जसराज, ए.आर.रहेमान जिन्होंने अपने भारतीय संगीत को उच्च शिखरपर पहुंचा दिया परिणाम यह रहा है की, आज भारतीय गायक ,वादक, नर्तक दुनिया के हर कोने में परफॉर्म करने जाते है और वाहवाही लुटते है। आज भारतीय संस्कृति, कला, संगीत संपुर्ण विश्व के आर्कषण का केंद्र बन चुकी है।

आधुनिक भारत में संगीत एक बड़ा बदलाव यह है की, मन में नयी पीढ़ी की विरीयता को ध्यान में रखते हुए बनाई गयी है। धुनों और मुड़ में एक सुक्ष्म अंतर बनाने के लीए धुनों और तेजी से धड़क रहा है के मिशन से जोड़ रहे है । कभी–कभी संलेयन पश्चिमी संगीत के साथ भारतीय शास्त्रीय संगीत के संम्मीश्रण के साथ बनाई गयी है। आधुनीक दुनिया के साथ तालमेंल रखते हुए भारतीय पॉप संगीत भी बनाई गयी है। संगीत के इस प्रकार भारतीय और पश्चिमी पॉप संगीत के एकीकरण के साथ बनाई गयी है।

आधुनिक भारत में संगीत न केवल पश्चिम प्रभाव Imbibes लेकीन कुछ मामलों में परंपरागत भारतीय संगीत आधुनिकता घुंघट में प्रस्तुत कर रहे है। कभी–कभी राग और ताल जो भारतीय संगीत के महत्वपुर्ण हीस्से है। नविनत्तम रचनाओं से घटा रहे है, आधुनिक प्रवृत्ति के लिए संगीत फीट बनाने के लीए। धुनों को कुछ पश्चिमी संगीत वाग्यंत्र, शब्द और प्रवृत्ति के उपयोग के संगीत के एक नये प्रकार बनाने के लीए हालाकी पश्चिमी और भारतीय °युजन की प्रतिकृति हमेशा उनमें व्रिमान करते है।

21 वीं सदी के शास्त्रीय संगीत के कला संगीत में समकालीन शास्त्रीय परंपरा है। कुछ वर्ष के बाद से उत्पादन किया गया है सहीत पीछली सदी के 2000 के कुछ तत्वों को बरकरार रखा गया है, के बाद आधुनिकता, Polystylism और Ecleticism है, जो चाहते है सबके तत्वों को शामील करने के लीए संगीत इन चाहे की शैलीयों में रहे है। ''शास्त्रीय यानी–इन प्रयासों के विभीन्न बिच एक Slackening भेदभाव का प्रतिनिधित्व संगीत शैलीया शास्त्रीय संगीत और संयोजन मल्टीमीडीया 21वीं सदी में एक उल्लेखनीय अभ्यास है। इंटरनेट इससे सबंधीत प्रौदयोगीकी के साथ इस संबध में महत्वपुर्ण संसाधन है।

आज के वैज्ञानिक युग में ईलेक्ट्रॉनीक्स टेक्नोलॉजी के नित्य प्रति नवीन से नवीन एवं अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक ध्वन्यांकन उपकरणों ने संगीत की अपार सहायता की है। आज हम इन्हीं उपकरणों की सहायता से अपने संगीत को संग्रहीत कर सकते है और पुनः जब चाहे तब सुन भी सकते है। आज इलेक्ट्रॉनिक तकनिक के माध्यम से तानपुरा व तबला जैसे वादयों की सजीव आवाज भी उपलदध हो गई

है। सिंथसाइजर ने तो सैंकडो वाद्यंत्रों को एक ही की–बोर्ड पर संभव बनाकर चमत्कार कर दिया है। जहॉ तक बदलाव की बात है तो इसे तो काई नहीं रोक सकता। संगीत एक ऐसी भाषा है जो सच्चे अर्थो में ग्लोबल है। इसिलीए इसमें इतने प्रयोग हो रहे है। क्योंकि इसमें प्रयोग करने की असीम सम्भावनाएं है।

जब से मनुष्य ने ध्वनी को रिकॉर्ड करना शुरू कीया तब से संगीत को जन–जन तक फैलाने में भी आसानी होगी एवं किसी भी कलाकार का संगीत सुनना साधारण मनुष्य के लीए सुलभ हो गया। ईलेक्ट्रॉनीक उपकरणों में से संगीत चिकीत्सा हेतु जीन उपकरणों का मुख्य योगदान है उनमें से मुख्य उपकरणों की उपयोगीता नीम्न नुसार है।

2.दृकश्राव्य माध्यमें.

रेडीओ (Radio) :–

ध्वनी को रिकॉर्ड करने तथा उसे एक स्थान से दुसरे स्थान तक पहुचाने की खोज कर लेने के पश्चात सबसे महत्वपुर्ण वैज्ञानिक खोज ''रेडीओ'' की ही रही। इसके द्वारा ध्वनी को संपुर्ण विश्व में एक स्थान से दुसरे स्थान तक कुछ पलों में ही पहुचाया जा सकता है।

संगीत चिकीत्सा में इसकी उपयोगीता का विश्लेषन करने पर हम पाते है की, रेडीओं से, संगीत से संपुर्ण विश्व के कोने–कोने में पहुचाया जा सकता है। जिन वादयंत्रों एवं कलाकारों के संगीत को हम प्रत्यक्ष रूपसे हम सक्षम नहीं होते। उनका संगीत भी इसके द्वारा हम तक पहुंच जाता है एवं हम उसका आनंद ले सकते है।

इसके अतिरिक्त रेडीओं द्वारा संगीत श्रवण करणे में जो दुसरा व्यवधान होता है वह है समय का। चुंकि रेडीओं से प्रसारीत संगीत का समय निश्चित एवं पुर्व निर्धारीत होता है। जो की हर श्रोता के लीए उपयुक्त हो ऐसा संभव नहीं हो सकता।इसके अतिरीक्त इसके प्रसारण पर स्वयं श्रोता का कोई भी अधिकार नहीं होता की, कोई पसंदीदा संगीत वह बार–बार सुनना चाहे तो भी वह सुन नहीं सकता।
इस तरह रेडीओं की संगीत चिकित्सा हेतु उपयोगीता में जहा कुछ लाभदायक सकारत्मक तथ्य हैं वहीं कुछ व्यवधान या ध्वण्यात्मक तथ्य भी हैं।

टेपरिकॉर्डर (Taperecorder) :–

ध्वनी को रिकॉर्ड करने की खोज कर लेने के पश्चात रेडीओं के बाद वैज्ञानिक द्वारा ध्वनी के क्षेत्र में मानव जाती दिया गया यह एक बहुत ही महत्वपुर्ण उपहार है। संगीत चिकित्सा के दृष्ट्रीकोन से इसमें उन समस्त कमीओं को दुर कीया गया है जो संगीत चिकित्सा के दौरान रेडीओं प्रयोग में व्यवधान बनकर सामने आती है। जैसे इसके द्वारा मनुष्य अपना मनपसंद संगीत जितनी बार भी चाहे एवं जिस समय भी चाहे बड़ी असानी से सुन सकता है।

इस उपकरण में बजनेवाली कॅसेटस एवं सी.डी. आदी का संगीत चिकित्सक बखुभी प्रयोग कर रहे है। वे मनुष्य के रोक के अनुसार संगीत एवं राग का चयन करके उसकी कॅसेटस, सी.डी. रोगी को सुनने के लीए देते है। जिसे सुनकर रोगी अपनी स्वास्थ की रक्षा करता है तथा रोग से मक्ति प्राप्त करता हैं।

कारला नामक गांव जो की लोनावला के करीब में स्थित हैं श्री. डॉ.बालाजी तांबे नामक आयुर्वेदीक चिकित्सक ने भी संगीत चिकित्सा हेतु स्वंय की दो सी.डी तयार की है। समाचार पत्र ''द टाईम्स ऑफ इंडीया'' में प्रकाशित उनके साक्षात्कार के अनुसार वे इन दो सी.डी का इस्तेमाल संगीत चिकित्सा हेतु करते है यथा –I have used music therapy in may two CDs. Healing music for energy and healing music for relaxation. 21

अर्थात :– मैं संगीत चिकित्सा में अपनी दो सी.डी. का उपयोग करता हुं। उर्जा के लीए संगीत एवं आराम देने के लीए संगीत।
कॅसेटस एवं कॉम्पेक्ट डिस्क आदी संगीत द्वारा चिकित्सा करने हेतु काफी उपयोगी सिध्द हो रही है एवं इसका उपयोग रोगी के लीए तथा सामुहीक तौर पर भी कीया जा सकता है। जबसे मानव ने ध्वनी को रिकॉर्ड करना सिख लीया तबसे सर्वप्रथम रिकार्डस, टेपरिकार्ड तथा इसके पश्चात सि.डी का अविष्कार कीया जिसमें दर्जा ब दर्जा ध्वनी के स्तर में सुधार किया गया है। टेपरिकार्ड में उपयोग होनेवाले कॅसेटस की आवाज रिकार्ड की अपेक्षा अधिक साफ व सुमधुर होती है एवं टेपरिकार्ड की अपेक्षा सि.डीं.की ध्वनी अधिक सुमधुर तथा उच्च स्तर की होती है जिसके कारण श्रोता को अधिक आनंद की अनुभुती होती है।

इंटरनेट मीडीया :–

आधुनिक युग में इंटरनेट एक प्रभावी माध्यम के रूप में उभर आया है। ज्ञान विज्ञान, विभिन्न सामाजिक क्षेत्र तथा कला क्षेत्र में इंटरनेट के आनेसे आमुलाग्र बदल हो चुके है इसी कारणवश दृष्य कला का क्षेत्र भी अपना पारंपारीक स्वरूप बदलकर नया आधुनिक रूप में बदलता आ रहा है। विशेष रूप से मीडीया व इंटरनेट के द्वारा '' व्यापक संप्रेषणियता '' का प्रचार प्रसार हुआ है इन तकनिकों ने संगीत के विभिन्न पक्षों को प्रभावित किया है। इंटरनेट के माध्यम से ही हमे जो म्युझीक या गाना चाहीए वो डाउनलोड करके मिलता है। कोई भी राग हो वह सुनने के लीए मिलता है, उसकी संपुर्ण जानकारी हमे मिलती है। संगीत के कलाकारों की जानकारी हमें इंटरनेटसे ही प्राप्त होती है। इंटरनेट संगीत के लीए एक प्रभावशाली माध्यम बन गया है। इसके कारण आधुनिक संगीत उदयोग की समृध्दी के लीए जिम्मेदार है।

दुरदर्शन (Television) :–

आधुनिक युग में दुरदर्शन एक दृक श्राव्य साधन होणे के कारण इसका उपयोग सर्वाधिक होता नजर आ रहा है। दुरदर्शन द्वारा प्रसारीत होनेवाले शास्त्रिय संगीत, लोक संगीत, सुगम संगीत, वृंदगायन, वृंदवादन इत्यादी सर्व प्रकार न की सुन सकते है बल्कि आखोंसे देख भी सकते है। इसके कारण आखों से देखे और सुने हुये संगीत को मन मे बिठाकर रख सकते है। दुरदर्शन द्वारा हमे नया नया संगीत

सुनने और देखने को मिलता है। नये नये गायक और संगीतकारों की पहचान हमें दुरदर्शन से होती है। दुरदर्शन के माध्यम से हमें गायन, वादन और नृत्य इन तिनों ही कलाओं का प्रत्यक्ष प्रस्तुतिकरन, संगीत महोत्सव, संगीत परिसंवाद, कलाकारों की मुलाखत हमें देखने को मिलती है। दुरदर्शन के माध्यम से राग गायन के आलाप, ताना, बड़ाख्याल, छोटाख्याल व तराना इनके प्रात्यक्षिक सादर कीए जाते है।
इसप्रकार इलेक्ट्रॉनीक उपकरणों में रेडीओ, टेपरिकॉर्डर, कॅसेटस, सि.डी, टी.व्ही, कंम्पुटर, इंटरनेट,दुरदर्शन आदीका संगीत चिकित्सा में महत्वपुर्ण योगदान रहा है। इनका उपयोग इस हेतु से ही किया जा रहा है। तथा आगे भविष्य में कीया जाता रहेंगा।

निष्कर्ष :–

इस प्रकार 21 वी शताब्दीं में दृकश्राव्य कला एवं साधन संगीत का प्रचार करणे में सफल हुवा दिखाई दे रहा है। निस्संदेह हम कह सकते है की भारतीय शास्त्रिय संगीत आज पुनः पुरे विश्व में अपनी छाप छोड़ रहा है। संगीत की लोकप्रियता भी बडी तीव्र गती से बढती जा रही है। आज रेडीओ, टेपरिकार्डर, टी.व्ही, फील्म, इंटरनेट समाचार पत्र, पत्रिकाए, यह जनसंचार माध्यमों ने मनुष्य के विकास को सकारात्मक रूप से सभी आयामों में प्रभावित किया है। सामाजिक, आर्थिक विकास, परिवर्तन विशेषकर मानसिक सोच में बदलाव लाने में इसनें महत्वपुर्ण भुमिका निभाई है। संगीत जो सर्व सुलभ नहीं था, उपलब्धीयों की विशेष चर्चा नहीं थी, व्यवसाय पुरक संगीत कला से लोग अनभिज्ञ थे निश्चित रूप से संचार माध्यमों द्वारा इसका एक विश्वसनिय आकार संभव हो सका। वर्तमान में भावना और तकनिक दोनों के उत्कृष्ठ मेल से ही कला का स्वर्णयुग आ सकता है।

संदर्भग्रंथ :

1.भारतीय संगीत : स्वरूप और प्रयोजन– कृष्णचंद्र साते.
2.संगीत गरूपुष्प – प्रा.देवेंद्र देशमुख
3.संगीत अलंकार – प.प.भ देशपांडे
4.संगीत चिकित्सा – डॉ. सतिश वर्मा
5.विकीपीडीया मुक्त विश्वकोष से.
6.India Netzone
7.Abstracts of Indian Art Forms Indira Kala Sangit Vishwavidyalay Khairagah page no.

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org